International Journal of Advanced Research in Engineering Technology & Science
ISSN: 2349-2819
Email: editor@ijarets.org Volume-8, Issue-10 October - 2021 www.ijarets.org

वैश्विक भाषा के रूप में हिंदी: प्रवासी समुदाय और अंतरराष्ट्रीय प्रभाव

डॉ अंजू अग्रवाल

सह आचार्य, हिंदी

बाबा गंगा दास राजकीय महिला महाविद्यालय, शाहपुरा (जयपुर)।

सार

हम अंतरराष्ट्रीय संबंधों की जटिल दुनिया के बारे में बात करते हैं, तो भाषा राष्ट्रों के बीच संचार, समझ और सहयोग के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में कार्य करती है। दुनिया की सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषाओं में से एक के रूप में पहचानी जाने वाली हिंदी एक विशिष्ट स्थान हासिल करने के लिए विकसित हुई है। भाषा केवल शब्दों के लिए एक माध्यम मात्र नहीं है; यह लोगों की संस्कृति, इतिहास और पहचान का प्रतीक है। हिंदी, अपनी समृद्ध ऐतिहासिक वंशावली और समकालीन प्रासंगिकता के साथ, भारत के सार और इसकी वैश्विक आकांक्षाओं को समाहित करती है। हिंदी विश्व स्तर पर सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। यह दुनिया में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, जिसे भारत में बोलने वालों की बड़ी संख्या है। हिंदी भाषी आबादी का विशाल आकार इस भाषा को महत्वपूर्ण वैश्विक महत्व देता है। हिंदी की समृद्ध सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत है। यह भारत की विविध पुरातत्व, साहित्य और कलाओं की गहराई से जुड़ी है।

मुख्य शब्द :- *अंतरराष्ट्रीय संबंध, हिंदी भाषा, भक्ति आंदोलन*

प्रस्तावना

हिंदी भाषा का एक समृद्ध इतिहास है जो प्राचीन इंडो-आर्यन जड़ों से लेकर भक्ति आंदोलन और मुगल काल के दौरान इसके मध्ययुगीन विकास तक विकसित हुआ है। 19वीं और 20वीं शताब्दी में ब्रजभाषा के उद्भव और मानकीकरण के प्रयासों ने आधुनिक हिंदी की नींव रखी। स्वतंत्रता के बाद, हिंदी को भारतीय संविधान में एक आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दी गई, जिसने प्रशासन और शिक्षा में इसकी प्रमुखता में योगदान दिया। देवनागरी लिपि में लिखी गई भाषा, संस्कृत, फ़ारसी, अरबी और अंग्रेजी की शब्दावली को शामिल करते हुए लगातार विकसित हो रही है और भारत के सांस्कृतिक, साहित्यिक और भाषाई परिदृश्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा का महत्व

हिंदी भाषा विभिन्न कारणों से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्व रखती है। 600 मिलियन से अधिक बोलने वालों के साथ, हिंदी विश्व स्तर पर सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। यह दुनिया में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन गई है। भारत सरकार की आधिकारिक भाषा और संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषाओं में से एक के रूप में, हिंदी अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति और संचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत की आर्थिक वृद्धि और सांस्कृतिक प्रभाव, जिसमें बॉलीवुड फिल्मों की वैश्विक लोकप्रियता भी शामिल है, हिंदी की बढ़ती मान्यता में योगदान करती है। इसके अतिरिक्त, भारतीय प्रवासी और दुनिया भर के शैक्षणिक संस्थानों में हिंदी भाषा पाठ्यक्रमों की उपस्थिति इसके

अंतर्राष्ट्रीय महत्व को बढ़ाती है, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और समझ को बढ़ावा देती है। हिंदी का प्रभाव भारत की सीमाओं से परे तक फैला हुआ है, जिससे यह वैश्विक प्रासंगिकता वाली भाषा बन गई है।

हिन्दी भाषा के ऐतिहासिक एवं वर्तमान महत्व का संक्षिप्त अवलोकन

हिंदी भाषा का ऐतिहासिक महत्व प्राचीन इंडो-आर्यन भाषाओं में इसकी जड़ों से पता लगाया जा सकता है, जो मध्यकाल में विकसित हुई, भक्ति आंदोलन से प्रभावित हुई और मुगल काल के दौरान आकार ली गई। ब्रज भाषा जैसे मानकीकृत रूपों के विकास ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता के बाद, हिंदी को भारतीय संविधान में एक आधिकारिक भाषा के रूप में प्रमुखता मिली, जिसने प्रशासन, शिक्षा और संस्कृति में इसके उपयोग में योगदान दिया।

वर्तमान में, हिंदी का महत्व 600 मिलियन से अधिक बोलने वालों के साथ विश्व स्तर पर तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा की स्थिति में है। यह भारत सरकार की आधिकारिक भाषा के रूप में कार्य करती है, संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषाओं में से एक के रूप में अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति में भूमिका निभाती है और भारत के आर्थिक विकास और सांस्कृतिक प्रभाव का अभिन्न अंग है। बॉलीवुड फिल्मों की वैश्विक लोकप्रियता, भारतीय प्रवासियों की उपस्थिति और दुनिया भर के शैक्षणिक संस्थानों में हिंदी भाषा पाठ्यक्रम इसकी अंतर्राष्ट्रीय प्रासंगिकता को और बढ़ाते हैं। हिंदी ऐतिहासिक गहराई और समकालीन वैश्विक महत्व दोनों के साथ एक भाषा के रूप में खड़ी है।

हिन्दी का प्रचार-प्रसार एवं संरक्षण

भारत सरकार ने घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न नीतियों और पहलों को लागू किया है। केंद्रीय हिंदी संस्थान जैसी संस्थाओं की स्थापना और पुरस्कारों और सम्मानों के माध्यम से हिंदी साहित्य को बढ़ावा देना इन प्रयासों का उदाहरण है। इसके अतिरिक्त, "हिंदी दिवस" जैसे अभियान भाषा के सांस्कृतिक महत्व का जश्न मनाते हैं।

वैश्वीकरण और वैश्विक भाषा के रूप में अंग्रेजी के प्रभुत्व वाले युग में, हिंदी को अपनी पहुंच का विस्तार करते हुए अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। भारत के भीतर भाषाई विविधता और डिजिटल संचार प्लेटफार्मों को अपनाने की आवश्यकता जैसे मुद्दे कुछ ऐसी बाधाएं हैं, जिन्हें तेजी से बदलती दुनिया में अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए हिंदी को दूर करना होगा।

हिन्दी साहित्य एवं कूटनीति

हिंदी साहित्य कहानियों, कविताओं और दार्शनिक ग्रंथों से बुनी एक जीवंत टेपेस्ट्री के रूप में कार्य करता है जो भारतीय संस्कृति और मूल्यों की समृद्ध टेपेस्ट्री का प्रतिनिधित्व करता है। यह एक सांस्कृतिक राजदूत के रूप में कार्य करता है, जो दुनिया को भारत के लोकाचार, परंपराओं और दृष्टिकोण से परिचित कराता है। साथ ही, अंतर-सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने में हिंदी साहित्य का उल्लेखनीय प्रभाव है।

प्रेमचंद और कबीर जैसे प्रसिद्ध लेखकों की रचनाएँ भाषाई सीमाओं से परे, सार्वभौमिक विषयों से गूंजती हैं। हिंदी साहित्यिक क्लासिक्स के अनुवाद वैश्विक दर्शकों को भारतीय विचार और कलात्मकता की गहराई और विविधता से परिचित कराते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा का विश्लेषण का अध्ययन
2. हिन्दी भाषा के ऐतिहासिक एवं वर्तमान महत्व का अध्ययन

वैश्विक संचार के माध्यम के रूप में हिंदी

हिंदी अंतरराष्ट्रीय मंचों और संगठनों में अपना स्थान पाती है, विशेषकर दक्षिण एशिया में कूटनीति की भाषा के रूप में। यह भारत और उसके पड़ोसी देशों के बीच संचार की सुविधा प्रदान करता है, क्षेत्रीय सहयोग और कूटनीति में योगदान देता है। यह दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) जैसे मंचों के भीतर बहुपक्षीय कूटनीति में भी भूमिका निभाता है।

तेजी से परस्पर जुड़ी हुई दुनिया में, हिंदी का महत्व क्षेत्रीय कूटनीति से भी आगे बढ़ गया है। यह दुनिया के विभिन्न हिस्सों में व्यापार, शिक्षा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान की भाषा के रूप में कार्य करती है। भारतीय प्रवासी हिंदी को बढ़ावा देने और वैश्विक मंच पर भारत की सॉफ्ट पावर को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा का विकास

वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा के विकास के कुछ मुख्य कारण निम्न हैं:

विश्व स्तर पर 600 मिलियन से अधिक लोगों द्वारा हिंदी बोली जाती है, जिससे यह दुनिया में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन गई है। हिंदी भाषी आबादी का विशाल आकार इसकी वैश्विक उपस्थिति में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

भारत सरकार में हिंदी को आधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त है और यह संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषाओं में से एक है। आधिकारिक डोमेन में यह मान्यता इसके वैश्विक महत्व को बढ़ाती है, खासकर अंतरराष्ट्रीय कूटनीति और संचार में।

भारत की तीव्र आर्थिक वृद्धि और बढ़ता वैश्विक प्रभाव हिंदी के बढ़ते महत्व में योगदान देता है। जैसे-जैसे भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, व्यवसाय और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में संलग्न होता है, हिंदी भाषा दक्षता की मांग बढ़ती है।

बॉलीवुड भारत का जीवंत फिल्म उद्योग, जिसकी प्राथमिक भाषा हिंदी है। उसके कई वैश्विक दर्शक वर्ग हैं। बॉलीवुड फिल्मों, संगीत और सांस्कृतिक निर्यात का प्रभाव हिंदी भाषा को विश्व स्तर पर फैलाने और भारतीय संस्कृति में रुचि बढ़ाने में मदद करता है।

दुनिया भर में फैले प्रवासी भारतीय हिंदी से गहरा रिश्ता रखते हैं। यह प्रवासी विभिन्न देशों में हिंदी भाषा और संस्कृति को बढ़ावा देने और इसके वैश्विक विकास में योगदान देने में एक प्रेरक शक्ति बन जाता है।

दुनिया भर के कई शैक्षणिक संस्थान हिंदी भाषा पाठ्यक्रम और भारतीय अध्ययन से संबंधित कार्यक्रम पेश करते हैं। यह शैक्षिक आउटरीच हिंदी भाषा और संस्कृति के वैश्विक प्रसार में मदद करता है।

डिजिटल युग ने इंटरनेट, सोशल मीडिया और डिजिटल सामग्री के माध्यम से हिंदी की वैश्विक पहुंच को आसान बना दिया है। हिंदी भाषा विविध वैश्विक दर्शकों के लिए सीखने में आसान है, जो वैश्विक मंच पर इसके विकास को बढ़ावा देती है।

एक पर्यटन स्थल के रूप में भारत की लोकप्रियता दुनिया के विभिन्न हिस्सों से लोगों को आकर्षित करती है। हिंदी पर्यटन और आतिथ्य क्षेत्रों में संचार की भाषा बन गई है, जो इसकी वैश्विक प्रासंगिकता में योगदान दे रही है।

विज्ञान, प्रौद्योगिकी और शिक्षा सहित विभिन्न क्षेत्रों में भारत और अन्य देशों के बीच सहयोग, भाषा और विचारों के आदान-प्रदान में योगदान देता है, जिससे हिंदी के वैश्विक विकास में वृद्धि होती है।

हिंदी भाषा पर्यटन की दृष्टि

भारत प्रतिष्ठित तीर्थ स्थल, महाबोधि मंदिर और प्रभावशाली ब्रिधादिश्वर मंदिर जैसे कई आश्चर्यजनक वास्तुशिल्प चमत्कारों से भरा है। मुंबई के ताज महल पैलेस के साथ ये स्थल दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। खूबसूरत पश्चिमी घाट के झरनों सहित भारत का विविध भूगोल इसके आकर्षण को बढ़ाता है। पर्यटन भारत की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो रोजगार प्रदान करता है और देश की समृद्ध सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत का प्रदर्शन करता है। इन पर्यटन स्थलों पर अधिकतर हिंदी भाषा प्रयोग में ली जाती है। भारत के पर्यटन में हिंदी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि यह आधिकारिक भाषाओं में से एक है और पूरे देश में व्यापक रूप से बोली जाती है। इसका महत्व पर्यटकों और स्थानीय लोगों के बीच संचार को सुविधाजनक बनाने, यात्रा अनुभव को बढ़ाने में शामिल है। हिंदी समझने से पर्यटकों को भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत समझने में और बातचीत करने में मदद मिलती है। हिंदी समझने से वे जिन विविध समुदायों से मिलते हैं, उनके साथ अधिक सार्थक संबंध बना पाते हैं।

हिन्दी का वैश्विक परिदृश्यः

यदि थोड़ी देर के लिए विश्व में हिंदी के भावी स्थान की बात छोड़कर उसकी वर्तमान स्थिति - गति और महत्ता पर ही नजर दौड़ाएँ तो हमारे सामने जो वैश्विक स्तर के आंकड़े आते हैं, वे बेहद उत्साह - वर्धक आते हैं। उदाहरणार्थ विश्व के 160 देशों में हिंदी देशी-विदेशी लोगों के बीच भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रति अपनत्व - भाव को जगा रही है। हमारे लिए यह गौरव की बात है कि भारत ही एक ऐसा एकमात्र देश है जिसकी पाँच भाषाएँ विश्व की 16 प्रमुख भाषाओं (अरबी, अँग्रेजी, रूसी, फ्रेंच, चीनी, स्पेनिश, हिंदी, इतावली, पुर्तगाली) में सम्मिलित होते हुए भी भारत सरकार की उपेक्षा के कारण वह अभी तक संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकारिक छह भाषाओं जिसमें चीनी, स्पेनिश, अँग्रेजी, अरबी, रूसी व फ्रेंच शामिल हैं। उनमें अपना नाम जुड़वाने का गौरव प्राप्त नहीं कर सकी है। यह शोध का विषय है कि अस्सी करोड़ (43%) से अधिक आमजनों द्वारा व्यवहृत हमारी हिंदी भाषा सयुंक्त राष्ट्र संघ में स्थापित नहीं हो पायी है। इसके विपरीत क्रमशः बीस व इक्कीस करोड़ लोगों द्वारा बोली जाने वाली रूसी व अरबी भाषाओं का वहाँ स्थापित होना निश्चित रूप से लज्जा का विषय है।

14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने संविधान के भाग -17 के अध्याय 1 की धारा 343 के अनुसार यह घोषणा की कि संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। उस समय विश्व में भाषाओं के प्रयोक्ताओं की संख्या के आधार पर हिंदी पाँचवे स्थान पर थी। चीनी, स्पेनिश, अँग्रेजी एवं रूसी भाषाएँ हिंदी से आगे थी। 1980 तक आते-2 हिंदी के प्रयोक्ताओं की संख्या में तीव्रतर वृद्धि दर्ज की गई और हिंदी, चीनी और अँग्रेजी के पश्चात् तीसरे स्थान पर आ गई। कहा जाता है कि हिन्दी विश्व के लगभग सभी महाद्वीपों तथा महत्त्वपूर्ण राष्ट्रों - जिनकी संख्या लगभग एक सौ चालीस हैं उनमें

किसी न किसी रूप में प्रयोग होती है। वह विश्व पटल पर नवल चित्र के समान अंकित हो रही है । आँकड़ों की अगर बात करें तो यहाँ तक बताया जाता है कि बोलने वालों की संख्या के आधार पर चीनी के बाद विश्व की सबसे बड़ी भाषा हिंदी ही है। डॉ० करुणाशंकर उपाध्याय के अनुसार बात को सर्वप्रथम सन् 1999 में मशीन - ट्रांसलेशन समिट अर्थात् यांत्रिक अनुवाद नामक संगोष्ठी में टोकियो विश्वविद्यालय के प्रो० होजुमि तनाका ने भाषाई आँकड़े पेश करके सिद्ध किया है। उनके द्वारा प्रस्तुत आँकड़ों के अनुसार विश्वभर में चीनी भाषा बोलने वालों का स्थान प्रथम है और हिंदी का द्वितीय है। अँग्रेजी तो तीसरे स्थान पर पहुँच गई है। इसी क्रम में कुछ ऐसे अनुसंधित्सु विद्वान भी सक्रिय हैं जो हिंदी को चीनी के ऊपर अर्थात् प्रथम क्रमांक पर दिखाने के लिए प्रयत्नशील है।"" भाषा शोध अध्ययन ने 2004 में लिखा था कि विश्व में हिंदी जानने वालों की संख्या एक अरब दो करोड़ पच्चीस लाख दस हजार तीन सौ बावन है जबकि चीनी बोलने वालों की संख्या केवल नब्बे करोड़ चार लाख छह हजार छह सौ चौदह है।

भारत की अंतर्राष्ट्रीय हैसियत और हिंदी

बात अगर आर्थिक दृष्टि से की जाए तो भारत व चीन 21वीं सदी की दुनिया की सबसे तेज गति से उभरती हुई अर्थव्यवस्था है। जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ इनके बाजार, उत्पादन और खपत में भी असीमित वृद्धि दर्ज की जा रही है। किसी देश की भाषा का विकास भी उस देश के बाजार और अर्थव्यवस्था के साथ निरन्तर गतिशील होता है। आज दुनिया का प्रत्येक देश भारत के साथ अपना व्यापार बढ़ाना चाहता है और अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए पश्चिम के बहुत से देशों के विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन प्रारम्भ हो चुका है। इससे बदलते विश्व में हिंदी को एक नई पहचान मिल रही है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भारत की बढ़ती भागीदारी ने हिंदी के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। भारतीय करैन्सी रूपये के साथ-साथ भारतीय भाषा हिन्दी भी पूरी दुनिया के देशों में पहुँच गई है। भारत देश के इस चतुर्दिक विकास को दृष्टिगत रखते हुए विश्व के बहुत से लोग अपनी अगली पीढ़ी को हिंदी सिखाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। जिससे वे भारत में अपना निवेश बढ़ा सके। इस संबंध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं। "कोई भाषा जितनी ही अधिक व्यापारों में मनुष्य का साथ देगी उसके विकास और प्रचार की उतनी ही अधिक सम्भावना होगी।" निश्चय ही भारत की बढ़ती अन्तर्राष्ट्रीय हैसियत हिंदी के लिए वरदान साबित हो रही है।

वैज्ञानिक और समर्थ भाषा हिंदी :-

हिंदी आज भारत में ही नहीं विश्व के विराट फलक पर अपने अस्तित्व को आकार दे रही है। आज वैश्विक स्तर पर यह सिद्ध हो चुका है कि हिन्दी भाषा अपनी लिपि और ध्वन्यात्मक उच्चारण के लिहाज से सबसे शुद्ध और विज्ञान सम्मत भाषा है। "देवनागरी एक वैज्ञानिक लिपि है, भारतीय भाषाएँ विश्व की अनेक भाषाओं की तुलना में वाक्य विज्ञान, ध्वनि - विज्ञान और रैखिक दृष्टि से अधिक से अधिक सुनियोजित हैं। अमेरिकी भाषा वैज्ञानिक श्री रिक ब्रिग्ज की यह धारणा है कि संस्कृत भाषा कम्प्यूटर प्रोग्राम की दृष्टि से आदर्श भाषा है। इसलिए देवनागरी लिपि में कम्प्यूटर कार्य करना कठिन नहीं है।"* हमारे यहाँ एक अक्षर से एक ही ध्वनि निकलती है और एक बिंदु अनुस्वार का भी अपना महत्त्व है। दूसरी भाषाओं में यह वैज्ञानिकता नहीं पाई जाती। वैश्विक स्तर पर वहीं भाषा टिक पाएगी जिसका शब्द भंडार या शब्दकोश समुद्र के समान विशाल हो। उस भाषा में औदात्य भी होना चाहिए ताकि वह अपनी शब्द-संपदा में निरन्तर उन्नति के शिखर को छूए । भारत का यह दुर्भाग्य रहा है कि भारत में अनेक विदेशियों ने शासन किया जिनमें तुर्क, मंगोल, अफगान, मुगल, फ्रांसीसी, पुर्तगाली और विशेषकर अँग्रेज थे इन शासकों ने अपनी-अपनी भाषा में दरबार चलाया और देश पर शासन किया। इस लिहाज से हिंदी का यह सौभाग्य रहा है कि हिंदी भाषा शासकीय भाषाओं से प्रभावित हुई और उसका शब्द भंडार जो संस्कृत के प्रभाव से पहले ही अत्यधिक समृद्ध था, वह और भी शब्द- सम्पन्न होता गया ।

'वाशिंगटन पोस्ट' के अनुसार हिंदी 2050 तक अधिकांश व्यावसायिक दुनिया पर हावी रहेगी, इसके बाद स्पेनिश, पुर्तगाली, अरबी और रूसी । यदि आप अपने कैरियर में भाषा द्वारा अधिक सफल होना चाहते हैं तो ऊपर सूचीबद्ध भाषाओं में से एक का अध्ययन करना सुनिश्चित करें ।

निष्कर्ष

निःसंदेह आज हिन्दी का फलक विस्तृत हुआ है। भारत के साथ-साथ आज हिन्दी विश्व भाषा बनने को तैयार है । आज हिन्दी में वह सामर्थ्य है जो पूरे देश को एक सूत्र में पिरोकर रख सकती है। आज हिंदी बाजार और व्यापार की प्रमुख भाषा बनकर उभरी है। हिन्दी आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने पैर जमाने में कामयाब हुई है। अब वह संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनने के लिए प्रयत्नशील है। भारत एक बहुसांस्कृतिक राष्ट्र और कई भाषाओं का देश है। ऐसे लोकतांत्रिक देश में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार अन्य सभी भाषाओं के लिए अस्वीकार्य या अनुचित माना जाता है। दक्षिणी राज्यों का पहले से ही मानना है कि सरकार और संविधान उनकी क्षेत्रीय भाषा को बढ़ावा देने के लिए पर्याप्त प्रयास नहीं कर रहे हैं क्योंकि संविधान में यह प्रावधान है कि यदि संसद का सदस्य अपनी क्षेत्रीय भाषा में बोलता है तो उसका अनुवाद अंग्रेजी या हिंदी में किया जाएगा। किसी अन्य भाषा में नहीं । हिन्दी के प्रचार-प्रसार और विकास में सभी भाषा-भाषियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वैश्विक फलक पर हिन्दी को स्थापित करने के लिए जहाँ एक ओर साहित्यकारों, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं ने इसकी पृष्ठभूमि तैयार की तो वहीं दूसरी तरफ हिन्दी फिल्मों, गीतों, विज्ञापनों, बाजार, कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि ने इसे विस्तीर्ण किया है।

संदर्भ सूची

1. डॉ० करुणाशंकर उपाध्याय - हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य लेख नेट पर उपलब्ध ।
2. राष्ट्र भाषा हिंदी - जनवरी 2000 पृ.सं. - 7.
3. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल–चिंत्तामणि भाग–3.
4. डॉ0 विजय कुमार मल्होत्रा, कम्प्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग
5. डॉ० वीना पाणी शर्मा - हिन्दी कैसे बने भारत के भाल की बिन्दी ? स्वदेशी रिसर्च जर्नल, अप्रैल - जून 2013 पृ0 199.
6. दैनिक जागरण–उत्थान को तरसती हिन्दी, अरविन्द कुमार, 19 सितम्बर 2014.
7. डॉ० वीना पाणि-स्वदेशी रिसर्च जर्नल जुलाई - सितम्बर 2013, पृ0 198.
8. दैनिक भास्कर (मधुरिमा परिशिष्ट : हिन्दी दिवस विशेष) 11 सितम्बर 2013, पृ0 5.
9. राष्ट्रभाषा हिन्दी समस्याएँ और समाधान, डॉ० देवेन्द्रनाथ शर्मा, पृ० 158.
10. भारत की भाषा समस्या, डॉ० रामविलास शर्मा, पृ0 164.
11. विमलेश कांति वर्मा, फीजी में हिंदी स्वरूप और विकास पृ. 1-2, 2000

12. राकेश शर्मा निशीथ, विदेशों में हिंदी का बढ़ता प्रभाव, अक्टूबर 2006, सृजनगाथा
13. कृष्ण कुमार यादव, भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी साहित्य कुंज 17 जनवरी 2009
14. विमलेश कांति वर्मा, फीजी में हिंदी स्वरूप और विकास पृ. 1-2, 2000
15. साहित्य अमृत, सितंबर 2010, पृ. 39